National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2017; 1(11): 105-107
© 2017 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

मण्डूक शिक्षा: वैदिक ध्वनि विज्ञान का प्राचीनतम ग्रन्थ

डॉ सुरेश कुमार

वैदिक साहित्य मानव सभ्यता की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध ज्ञान-सम्पदा है। इस अथाह समुद्र की रक्षा एवं शुद्ध प्रसारण हेतु ऋषियों ने छः वेदांगों की रचना की, जिनमें शिक्षा प्रथम एवं सर्वाधिक मौलिक वेदांग है। शिक्षा, वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण का विज्ञान है। इसी महान शिक्षा परम्परा का एक अत्यंत प्रामाणिक, संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित ग्रन्थ है मण्डूक शिक्षा । मण्डूक अर्थात 'मेंढक'। कहा जाता है कि जिस प्रकार मेंढक बिना हिले-डुले केवल स्वर का उच्चारण करता है, उसी प्रकार वैदिक पाठक को बिना शारीरिक क्षोभ के शुद्ध स्वर में मंत्रों का उच्चारण करना चाहिए। यह ग्रन्थ अपनी सरलता, गहनता और व्यावहारिकता के लिए विख्यात है। यह लेख मण्डूक शिक्षा के दार्शनिक आधार, उसके प्रमुख सिद्धान्तों, मूल मंत्रों एवं उनके प्रामाणिक सन्दर्भ संख्याओं का गहन अनुशीलन प्रस्तुत करेगा।

शिक्षां व्याख्यास्यामः। वर्णः स्वरः मात्रा बलम्।
साम सन्तान इत्युक्तः शिक्षाध्यायः॥[1]

मण्डूक शिक्षा का परिचय एवं ऐतिहासिक सन्दर्भ

मण्डूक शिक्षा सम्पूर्ण वैदिक साहित्य की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यह ग्रन्थ कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध माना जाता है। इसे पाणिनीय शिक्षा जैसे ग्रन्थों के समकालीन माना जा सकता है।

ऋषि परम्परा: इस ग्रन्थ के प्रवक्ता ऋषि माण्डूक्य या मण्डूक ऋषि माने जाते हैं। इन्हीं के नाम पर इस ग्रन्थ का नामकरण हुआ है। यह ग्रन्थ मूल रूप से संस्कृत छन्दों (श्लोकों) में रचित है और इसकी शैली अत्यंत तर्कसंगत एवं विश्लेषणात्मक है।

मण्डूक शिक्षा का महत्व इसकी संक्षिप्तता एवं सारगर्भिता में निहित है। इसमें थोड़े से श्लोकों में ही स्वर, वर्ण, मात्रा, बल आदि के गूढ़ रहस्यों को समेट दिया गया है। यह ग्रन्थ इस बात का प्रमाण है कि वैदिक ऋषियों को ध्वनि-विज्ञान का इतना गहन ज्ञान था, जो आधुनिक विज्ञान के लिए भी आश्चर्य का विषय है।

मण्डूक शिक्षा के दार्शनिक एवं आध्यात्मिक सिद्धान्त

मण्डूक शिक्षा की नींव केवल उच्चारण की तकनीक पर ही नहीं, बल्कि एक गहन दार्शनिक चिंतन पर टिकी है। यह ग्रन्थ शब्दब्रह्म की अवधारणा को केन्द्र में रखता है।

1. ॐकार की सर्वोच्चता:

मण्डूक शिक्षा में ॐकार को समस्त वैदिक ध्वनियों का मूल, सार और चरम लक्ष्य माना गया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही इसकी महिमा बताई गई है।

"ओमित्यागम्य सर्वत्र विनियोगः प्रकीर्तितः।

तस्मादोमिति निर्दिश्य प्रयोगः सर्वकर्मसु।।[2]"

"ॐ का आगमन (प्रयोग) सर्वत्र कहा गया है। इसलिए ॐ को निर्दिष्ट करके सभी कर्मों (अनुष्ठानों) में इसका प्रयोग करना चाहिए।"

यह श्लोक स्पष्ट करता है कि कोई भी वैदिक अनुष्ठान या मंत्र-साधना ॐकार के बिना पूर्ण नहीं होती। ॐकार ही वह ध्वनि-सूत्र है जो साधक को जड़ से चेतना की ओर ले जाता है।

2. वर्णों की दिव्य उत्पत्ति:

यह ग्रन्थ वर्णों की उत्पत्ति को एक दिव्य प्रक्रिया मानता है। समस्त वर्ण मूलतः शिव-शक्ति के ही प्रतीक हैं।

सोऽयमात्माध्यक्षरमोंकारोऽधिमात्रं पादा मात्राः।

अकार उकारो मकार इति॥[3]"

" यह आत्मा 'ओंकार' है; उसके अ, उ, म—ये तीन मात्राएँ हैं (जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति/विश्व-तैजस-प्राज्ञ का संकेत)।

इस प्रकार के श्लोकों में ॐकार के तीन मात्राओं (अ, उ, म) और विसर्ग (अः) को ब्रह्मांड की समस्त शक्तियों का स्रोत बताया गया है। इस प्रकार, प्रत्येक वर्ण का उच्चारण एक दिव्य क्रिया बन जाती है।

मण्डूक शिक्षा के प्रमुख मंत्र एवं सिद्धान्त

1. प्रारम्भिक मंत्र एवं प्रतिज्ञा:

"ॐ नमः शिवाय।

अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि माण्डूक्येन प्रकीर्तिताम्।

साङ्गोपाङ्गां सस्वरां च सबलां सपदक्रमाम्।।[4]"

"शिवाय नमः। अब मैं माण्डूक्य (मण्डूक ऋषि) द्वारा कथित उस शिक्षा का वर्णन करूंगा, जो अंग-उपांग सहित, स्वर सहित, बल (जोर) सहित और पदक्रम सहित है।"

यह श्लोक बताता है कि यह शिक्षा सम्पूर्ण है और इसमें उच्चारण के अंग-उपांग सहित, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि स्वरों सहित, बलाघात और पदक्रम के सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है।

2. शिक्षा के अंगों का वर्णन:

मण्डूक शिक्षा में शिक्षा के छः अंग बताए गए हैं, जो वर्णों के शुद्ध उच्चारण के लिए अनिवार्य हैं।

"वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्।

सा सन्तान इति षडङ्गं शिक्षितव्यम्।।[5]"

"वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, सान (यम) और सन्तान (अनुसन्धान) – इन छः अंगों को शिक्षा में सीखना चाहिए।"

- **वर्ण:** अक्षरों का शुद्ध उच्चारण स्थान (स्थान) एवं प्रयत्न से जानना।
- **स्वर:** उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वरों का ज्ञान।
- **मात्रा:** प्रत्येक वर्ण के उच्चारण में लगने वाले समय (ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत) का निर्धारण।
- **बल:** उच्चारण में लगने वाला बल (जोर) अर्थात प्रयास।
- **सान (यम):** वर्णों के मेल (सन्धि) एवं पाठ की निरन्तरता से सम्बन्धित नियम।
- **सन्तान (अनुसन्धान):** मंत्रों के अर्थ का चिन्तन एवं उनकी श्रृंखला को समझना।

3. स्वरों का वर्गीकरण एवं महत्व:

मण्डूक शिक्षा में तीन विशिष्टता है।

"उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्चेति ते त्रयः।

संयुक्तास्तु चतुर्थ्यन्ता मन्त्रेष्वेव प्रयुज्यते।।[6]"

"उदात्त, अनुदात्त और स्वरित – ये तीन (स्वर) हैं। इनके साथ चौथा (संयुक्त) भी (माना जाता है)। इनका प्रयोग विशेष रूप से मंत्रों में ही किया जाता है।"

यह श्लोक वैदिक स्वरों की मौलिक जानकारी देता है। उदात्त उच्च स्वर, अनुदात्त निम्न स्वर और स्वरित मिश्रित स्वर होता है। इनके शुद्ध उच्चारण से ही मंत्र का अभीष्ट फल प्राप्त होता है।

4. वर्णाभ्यास का महत्व

शुद्ध उच्चारण के लिए वर्णाभ्यास सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

"वर्णज्ञः सर्वमन्त्राणां फलं प्राप्नोति नान्यथा।

तस्माद्वर्णक्रियां कुर्याद्यथाशक्ति समाहितः।।[7]"

"वर्णों का ज्ञाता समस्त मंत्रों का फल प्राप्त करता है, अन्यथा नहीं। इसलिए यथाशक्ति एकाग्रचित्त होकर वर्णों के उच्चारण का अभ्यास करना चाहिए।"

यह श्लोक वर्ण-ज्ञान को मंत्र-सिद्धि की अनिवार्य शर्त बताता है। बिना शुद्ध उच्चारण के मंत्र-जाप निरर्थक या कभी-कभी हानिकारक भी हो सकता है।

5. सान (यम) के नियम

सान या यम, पाठ की निरन्तरता और शुद्धता सुनिश्चित करने वाले नियम हैं।

"प्राणायामः समर्थश्च विभाषा स्तोभ एव च।

विराम एकश्चेति सा पञ्चधा परिकीर्तिता।।[8]"

स्वरों का उल्लेख है जो वैदिक संस्कृत की एक"प्राणायाम, समर्थ, विभाषा, स्तोभ और एक विराम – इस प्रकार सान (यम) पाँच प्रकार की कही गई है।"

ये पाँचों यम वैदिक पाठ की शैली के महत्वपूर्ण अंग हैं। इनमें श्वास का नियंत्रण (प्राणायाम), शब्दों के मेल (समर्थ), विकल्प (विभाषा), विशेष ध्वनि-चिह्न (स्तोभ) और विराम सम्मिलित हैं।

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः॥[9]

मण्डूक शिक्षा की वैज्ञानिकता एवं वर्तमान प्रासंगिकता

मण्डूक शिक्षा में वर्णित सिद्धान्त आधुनिक ध्वनि विज्ञान से पूर्णतः सामंजस्य रखते हैं।

1. **उच्चारण स्थान:** मण्डूक शिक्षा में वर्णों का वर्गीकरण उनके उच्चारण स्थान के आधार पर किया गया है – कण्ठ्य (गले से), तालव्य (तालु से), मूर्धन्य (मूर्धा से), दन्त्य (दाँतों से), ओष्ठ्य (ओठों से)। यह वर्गीकरण आधुनिक Phonetics के अनुरूप ही है।
2. **स्वरों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव:** उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वरों का प्रभाव मनुष्य की मनोदशा और शरीर की ऊर्जा पर पड़ता है। शुद्ध स्वरों से मंत्र-जाप मन को शान्त और एकाग्र करता है।
3. **वर्तमान शिक्षा में महत्व:** आज भी देश-विदेश के समस्त वेद-पाठशालाओं और संस्कृत विश्वविद्यालयों में मण्डूक शिक्षा जैसे ग्रन्थों का ही अध्ययन कराया जाता है। यह ग्रन्थ भारतीय ज्ञान-परम्परा की वैज्ञानिक दृष्टि का जीवन्त प्रमाण है।

मन्त्रहीनः स्वरतो वर्णतो वा

मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।

स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति

यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥[10]

निष्कर्ष

माण्डूक्य शिक्षा वैदिक ध्वनि-विज्ञान की प्राचीनतम एवं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृतियों में से एक है। यह ग्रन्थ केवल उच्चारण-विधि का निर्देश नहीं देता, बल्कि वैदिक परम्परा में ध्वनि, स्वर, मात्रा, वर्ण एवं उच्चारण-शुद्धता के वैज्ञानिक आधार को भी स्पष्ट करता है। इसमें वर्णों की उत्पत्ति, स्वर-संरचना, उच्चारण-स्थान तथा वैदिक स्वरों की सूक्ष्म व्याख्या प्राप्त होती है, जिससे यह ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों को ध्वनि-विज्ञान का गहन एवं व्यवस्थित ज्ञान था।

इस ग्रन्थ का प्रमुख उद्देश्य वेदमंत्रों की शुद्धता एवं मौखिक परम्परा की अक्षुण्ण रक्षा करना था। वैदिक संस्कृति में मंत्रों के अशुद्ध उच्चारण को अर्थ-विपर्यय एवं आध्यात्मिक प्रभाव की हानि का कारण माना गया है, इसलिए माण्डूक्य शिक्षा ने वैदिक अध्ययन को वैज्ञानिक अनुशासन प्रदान किया।

आधुनिक भाषाविज्ञान एवं ध्वनि-विज्ञान की दृष्टि से भी यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है। इसमें वर्णित उच्चारण-सिद्धान्त, ध्वनि-उत्पत्ति की प्रक्रिया तथा स्वर-विन्यास आज के फोनेटिक्स और भाषिक अध्ययन के अनेक सिद्धान्तों से साम्य रखते हैं। इस प्रकार माण्डूक्य शिक्षा केवल धार्मिक या वैदिक ग्रन्थ नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान-परम्परा के वैज्ञानिक एवं भाषिक चिंतन का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

अतः कहा जा सकता है कि माण्डूक्य शिक्षा वैदिक ध्वनि-विज्ञान की आधारशिला है, जिसने भारतीय मौखिक परम्परा, संस्कृत भाषा की शुद्धता तथा वैदिक ज्ञान की निरन्तरता को सुरक्षित रखने में अद्वितीय योगदान दिया।

संदर्भ-सूची

1. तैत्तिरीयोपनिषद् 1.2
2. मण्डूक शिक्षा, श्लोक 4
3. माण्डूक्य उपनिषद्, मन्त्र 8
4. मण्डूक शिक्षा, श्लोक 1
5. मण्डूक शिक्षा, श्लोक 2
6. मण्डूक शिक्षा, श्लोक 5
7. मण्डूक शिक्षा, श्लोक 10
8. मण्डूक शिक्षा, श्लोक 7
9. योगसूत्र 2.30
10. पाणिनीयशिक्षा 52